Page No.:
Date: / /

राष्ट्रीय सभा के कार्य -

कार्यकाल - 1789 - 1791

⇒ 4 अगस्त 1789 को सभी प्रकार के विशेषाधिकार समाप्त।
⇒ सामन्ती कर, चर्च के धार्मिक करो की समाप्ती
⇒ पदो के क्रय विक्रय का निषेध
⇒ न्याय को निशुल्क घोषित किया गया।
⇒ दास प्रथा समाप्त कर दिया गया।
⇒ मानवाधिकारो की घोषणा की गयी
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धार्मिक मान्यताओ की स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया।

⇒ सभा ने संविधान का निर्माण किया जिसे 1791 का संविधान कहा जाता है।
⇒ निर्वाचन के लिए अप्रत्यक्ष प्रणाली अपनायी गयी
⇒ प्रशासन का पूर्ण विकेन्द्रीयकरण कर दिया गया।

⇒ आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए चर्च की भूमि को बेचा गया।

परन्तु राष्ट्रीय सभा ने 3 sept 1791 ई० को एक अनावश्यक गलती कर दी उसने एक प्रस्ताव पारित करके घोषणा की कि वर्तमान संविधान सभा का कोई भी सदस्य आगामी व्यवस्थापिका का सदस्य नहीं हो सकता था।

व्यवस्थापिका सभा

कार्यकाल → अक्टूबर 1791 - सितम्बर 1792

संविधान परिषद् के विघटन के बाद 1 अक्टूबर 1791 को व्यवस्थापिका सभा का अधिवेशन हुआ। इसके सदस्यों की संख्या 745 थी। ये मध्यम वर्ग के लोग थे और सब के सब नव निर्वाचित। इनमें से किसी ने संविधान निर्माण के कार्य में भाग नहीं लिया था अतः उन्हें संविधान का कोई अनुभव नहीं था।

व्यवस्थापिका सभा में दलबन्दी :-

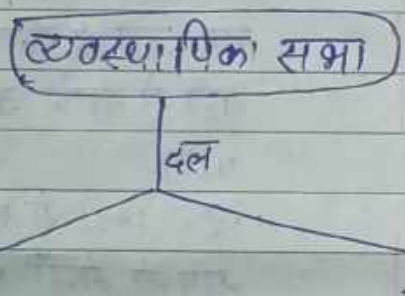

राजसत्तावादी

→ संख्या - 505
→ फेइयाँ भी कहते थे।
→ सदन में दायीं ओर बैठते थे।
→ संविधान के कट्टर समर्थक थे।
→ वैध राजतंत्र को कायम रखने के पक्ष में

गणतन्त्रवादी

→ संख्या - 240
→ बायीं ओर बैठते थे।
→ बड़े ही उग्रवादी थे।
→ इनके अनुसार क्रांति का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ था और गणतंत्र की स्थापना आवश्यक थी।
→ राजसत्ता का अंत कर गणतंत्र स्थापित करना चाहते थे।

गणतंत्रवादी अपनी विचारधारा की विभिन्नता के कारण दो दलों मे विभक्त थे -

जिरोंदीस्त	जेकोबिन
→ अधिकांश सदस्य जिरोंद प्रान्त के थे इसलिए जिरोंदिस्त कहा गया।	→ पेरिस से आए थे।
→ उग्रवादी थे।	→ संविधान परिषद के कुछ सदस्य जिनके विचार आपस में मिलते थे, इन्होने जैकोबिन के गिरजे के विशाल घर रहने के लिए किराए पर ले लिए यही से इनके क्लब का नाम जैकोबिन पड़ा।
→ इनके प्रमुख नेता - ब्रिसा, वेरियो, दूमूरिये	→ जून 1791 से पहले इनकी बैठक गुप्त रूप से होती थी।
→ उग्रवादी होते हुए भी ये लोग प्रत्येक कदम वैधानिक रीति से उठाना चाहते थे।	→ जैकोबिन लोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिंसा, आतंक तथा हत्या आदि सब कुछ करना चाहते थे।
→ जिरोंदीस्तो की एकमात्र नीति गणतंत्र की स्थापना	→ प्रमुख नेता - राब्सपीयर, मरात, दांतो, देशमोल।
→ जिरोंदीस्त की संख्या जैकोबिन से अधिक थी लेकिन ये केवल आदर्शवादी थे और सिद्धान्तो की बात करते थे।	→ जैकोबिन नए संविधान से असंतुष्ट थे क्योंकि श्रमिको और निर्धनो को मताधिकार नहीं दिया गया था।

राष्ट्रीय कन्वेन्शन

⇒ फ्रांस की तीसरी पार्लियामेन्ट राष्ट्रीय कन्वेंशन।
⇒ कार्यकाल → 20 Sep 1792 – 26 Oct 1795

⇒ राजा लुई को निलम्बित करने के बाद व्यवस्थापिका सभा ने राष्ट्रीय कन्वेशन को मुख्य रूप से दो कार्यों को करने के लिए बुलाने का निर्णय किया था – संविधान का निर्माण, राजा के बारे में निर्णय करना।

समस्याएँ :-

21 Sept 1792 को राष्ट्रीय कन्वेन्शन का प्रथम अधिवेशन हुआ। इसके सदस्यों की कुल संख्या 782 थी जिसमें उग्रवादी गणतंत्रवादियों का बहुमत था।
कन्वेन्शन के सामने अनेक आन्तरिक और बाह्य समस्याएं थी
1) राजा और राजतन्त्र के बारे में निर्णय करना।
2) देश की रक्षा के लिए शक्तिशाली कार्यपालिका का निर्माण करना।
3) देश को विदेशी आक्रमणकारियों से रक्षा करना।
4) आंतरिक विद्रोहों को समाप्त करके देश की एकता की रक्षा करना तथा क्रान्ति-विरोधियों को समाप्त करना।
5) संविधान का निर्माण करना।

कन्वेन्शन ने संविधान का निर्माण किया जिसे 1793 का संविधान कहा गया।

⇒ कन्वेन्शन ने फ्रान्स के प्रशासन का उत्तरदायित्व उस समय लिया था जब फ्रांस विदेशी आक्रमण और आन्तरिक विद्रोह के संकट में फँसा हुआ था। कन्वेन्शन ने सभी समस्याओं को हल करने में सफलता प्राप्त की। उसने गणतंत्र की स्थापना की। शक्तिशाली कार्यपालिका स्थापित की और राष्ट्रीय सेनाओं का गठन किए। उसने फ्रान्स को

विजय दिलवायी और प्राकृतिक सीमाओं को प्राप्त किया जो कोई दूर्बो राजा प्राप्त न कर सका। आतंक राज्य स्थापित करने उसने क्रान्ति विरोधियों को आतंकित कर दिया भयंकर रक्तपात और निर्दयता का प्रदर्शन किया गया

आतंक का राज्य (Regin of Terror)

राष्ट्रीय कन्वेन्शन को बाहरी और आन्तरिक शत्रुओं को कुचलने के लिए एक विशेष व्यवस्था करनी पड़ी थी जो भय और आतंक पर आधारित थी अतः इस व्यवस्था को आतंक का राज्य कहा गया हैं

⇒ आरम्भ → 29 मार्च 1793
⇒ अन्त → 29 जुलाई 1794
⇒ संस्थापक → राब्सपियर

आतंक का राज्य 29 जुलाई 1794 को राब्सपियर की मृत्यु के साथ समाप्त हुआ। सम्पूर्ण फ्रान्स में 17,000 व्यक्तियों को क्रान्ति का शत्रु होने के सन्देह में मृत्यु दण्ड दिया गया था।

कारण:-

आतंक राज्य के मूल में भय भावना थी। क्रान्तिकारी समझते थे कि भय से लोगों को देशभक्त बनाया जा सकता है। विदेशी आक्रमण का भय और देश के अन्दर देशद्रोहियों और ~~क~~ क्रान्ति के शत्रुओं के कारण पेरिस में आतंक का वातावरण निर्मित हो गया था। इस समय कठोर उपायों की आवश्यकता थी। दान्तो ने क्रान्तिकारी न्यायाधिकरण का प्रस्ताव पारित कराया।

आतंक राज्य के साधन -

न्यायाधिकरण का कार्य क्रान्ति के शत्रुओं के मामलों में शीघ्र निर्णय करना था। 6 अप्रैल 1793 ई० को सामान्य सुरक्षा समिति गठित की गई। इसका कार्य अपराधियों की खोज कर न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करना था। सितम्बर 1793 में संदेहास्पद व्यक्तियों का कानून पारित किया गया। अब किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर प्राणदण्ड दिया जा सकता है।

राब्सपियर और महाआतंक -

राब्सपियर ने महाआतंक स्थापित किया। उसने रूसो के विचारों तथा सदाचार के राज्य की स्थापना के लिए आतंक का प्रयोग किया। चार माह में केवल पेरिस में 1376 व्यक्तियों का वध कर दिया गया। दो दिन में ही 150 व्यक्ति गिलोटिन की भेंट कर दिये गए। इस वीभत्स काण्ड से कन्वेन्शन के सदस्य राब्सपियर के विरुद्ध हो गए। अन्त में 27 July 1794 ई० को उसे बन्दी बना लिया गया और कन्वेन्शन के आदेश पर उसे 90 साथियों सहित गिलोटिन पर चढ़ा कर वध कर दिया गया।

डायरेक्टरी का शासन

कार्यकाल → 27 Oct 1795 से 9 नवम्बर 1799 तक

कन्वेन्शन के बाद फ्रांस में डायरेक्टरी का शासन शुरू हुआ इस काल मे फ्रांस में विधिपूर्वक गणतन्त्र शासन का आरंभ हुआ। फ्रांस की क्रांति और नेपोलियन के उत्कर्ष के बीच डायरेक्टरी के काल को विराम काल कहा जा सकता है।

→ डायरेक्टरी का इतिहास असफलताओं का इतिहास है। डायरेक्टरी में पांच निदेशक थे इसमें कार्नो को छोड़कर सभी कम बुद्धि वाले, बदमाश, बदनाम और स्वार्थी राजनीतिज्ञ थे। उनमें किसी को न तो जनता का समर्थन प्राप्त था और न कोई कार्य कुशल ही था।

→ डायरेक्टरी का काल फ्रांस के मध्यम वर्ग के चरमोत्कर्ष का काल था। शासन का सारा कार्य उन्ही के हित में होता था।
→ फ्रांस की आर्थिक दशा खराब होती जा रही थी। बेकारी बढ रही थी और मुद्रा का अवमूल्यन हो रहा था राजस्व से आय कम हो रही थी कर संग्रह ठीक से नही हो पा रहा था। उत्पादन और व्यापार गिर रहा था।
डाइरेक्टरी का शासन जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ रहा।

→ डाइरेक्टरी के शासन काल में हुए विद्रोहों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विद्रोह वैन्दियन विद्रोह था। यह पूँजीवादी मध्यम वर्गीय शासन से फ्रांस को मुक्ति दिलाने का एक प्रयास था। इसका मुख्य नेता बबूफ था। बबूफ भले ही अपने प्रयास में सफल न रहा उसकी हत्या कर दी गयी

लेकिन बबूफवाद जीवित रहा। 1828 में ब्रुसेल्स से उसकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें बबूफ के विचारों और तरीकों का विश्लेषण किया गया था। 19वी शताब्दी में समस्त यूरोप में क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए यह पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण बन गयी।